

आओ मनायें

विश्वगुरु भारत कार्यक्रम

श्रीमद्भगवद्गीता
जयंती



मोक्षदा एकादशी

तुलसी पूजन
दिवस



२५ दिसम्बर

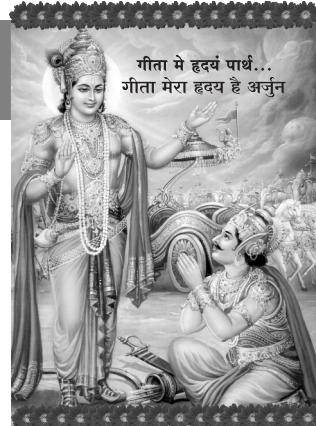
श्रीमद्भगवद्गीता जयंती

* सम्पूर्ण विश्व में 'श्रीमद्भगवद्गीता' ही एक ऐसा ग्रंथ है जिसकी जयंती मनायी जाती है।

* जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए गीता एक अद्भुत ग्रंथ है।

* 'गीता' का ज्ञान जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति देनेवाला है।

हरि सम जग कछु वस्तु नहीं, प्रेम पंथ सम पंथ।
सद्गुरु सम सज्जन नहीं, गीता सम नहिं ग्रंथ ॥



पूज्य संत श्री आशारामजी बापू बुलशी पूजन छिवास (२५ दिसम्बर)



* जो दारिद्र्य मिटाना व सुख-सम्पदा पाना चाहता है, उसे तुलसी पूजन दिवस के अवसर पर शुद्ध भाव व भक्ति से तुलसी के पौधे की १०८ परिक्रमा करनी चाहिए। * तुलसी के थोड़े पत्ते पानी में डाल के उसे सामने रखकर भगवद्गीता का पाठ करें। * फिर घर के सभी लोग मिल के भगवन्नाम-कीर्तन करके हास्य-प्रयोग करें और वह पवित्र जल सब लोग ग्रहण करें। * यह प्रयोग करने से घर के झगड़े मिटते हैं, शराब-कबाब, क्लव की आदत छूटती है और घर में सुख-शांति का वास होता है। * शराब- कबाब कलह दूर होता है।"

विद्यालयों में भी तुलसी पूजन दिवस मनायें। इस दिन विद्यार्थी तुलसी माता की परिक्रमा करें, पूजन करें तथा तुलसीजी का पौधा घर पर लगायें, सिंचन करें और उनके पत्ते के नित्य सेवन से बौद्धिक विकास व स्वास्थ्य लाभ लें।

- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

visit - ashram.org,
[f /SantShriAsharamJiBapu](https://www.facebook.com/SantShriAsharamJiBapu)
[E /AsaramBapuJi](https://www.instagram.com/AsaramBapuJi)
[You /SantAmritvani](https://www.youtube.com/SantAmritvani)

महापुरुषों के उद्गार



“इस ग्रंथ में सब देशों, जातियों, पंथों के तमाम मनुष्यों के कल्याण की अलौकिक सामग्री भरी हुई है। दिव्य गुणों का विकास करनेवाला यह गीताग्रंथ विश्व में अद्वितीय है।”

- पूज्यपाद स्वामी
श्री लीलाशाहजी महाराज



“जो अपने-आप श्रीविष्णु भगवान के मुखकमल से निकली हुई है, वह गीता अच्छी तरह कंठस्थ करनी चाहिए।”

- महर्षि वेदव्यासजी

जीवन में साहस, हिम्मत, समता, सहजता, स्नेह, शांति और धर्म आदि दैवी गुण विकसित हो उठते हैं, अधर्म और शोषण का मुकाबला करने का सामर्थ्य आ जाता है। अतः प्रत्येक युवक-युवती को गीता के श्लोक कंठस्थ करने चाहिए और उनके अर्थ में गोता लगाकर अपने जीवन को तेजस्वी-ओजस्वी बनाना चाहिए।”

- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

“श्रीमद्भगवद्गीता उपनिषदस्त्रपी बगीचों में से चुने हुए आध्यात्मिक सत्यरूपी पुष्टों से गुंथा हुआ पुष्पगुच्छ है।”

- स्वामी विवेकानंद



कैसे मनायें गीता जयंती

गीता जयंती - मोक्षदा एकादशी

- * श्रीमद्भगवद्गीता को स्वच्छ, सुंदर, ऊँचे आसन पर स्थापित करके पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन करें।
- * गीता-माहात्म्य पढ़ने के बाद पाठ करें। सामूहिक पाठ का भी आयोजन कर सकते हैं।
- * प्रतिदिन कुछ श्लोक पढ़ने का संकल्प करें-करायें।
- * ‘गीता-ज्ञान गोष्ठी’ भी कर सकते हैं। सबको परमात्मस्वरूप समझकर सभीकी भलाई व उन्नति का संकल्प तथा व्यवहार करना यह गीता तथा गीताकार की सच्ची पूजा है।

इस दिन विद्यालयों में गीता-गोष्ठी, गीता प्रतियोगिता, गीता के श्लोकों का पठन-पाठन आदि आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करवाकर विद्यार्थियों को गीता की महिमा बतायें तथा दित्य इसका पाठ करने के लिए उठहें प्रेरित करें।



गीता के १८वें अध्याय के इस आखिरी श्लोक का २१ बार जप करके जायें तो नौकरी-धंधा व रोजी-रोटी बढ़िया चलेगी।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्रीविजयो भूतिर्घुवा नीतिर्मतिर्म ॥ (गीता : १८.७८)



गीता के १५वें अध्याय का पाठ करके भोजन करने से भोजन भगवत्प्रसाद बन जाता है।

(गीता के सभी अध्यायों के श्लोक, अर्थ व माहात्म्य के लिए पढ़ें आश्रम से प्रकाशित ‘श्रीमद्भगवद्गीता’।)

visit - balsanskarkendra.org

/BalSanskarSewa

/BalSanskarSewa

/BalSanskarKendraOfficial

गीतायाः श्लोकपाठेन

गोविन्दस्मृतिकीर्तनात् ।

साधुदर्शनमात्रेण

तीर्थकोटिफलं लभेत् ॥

‘गीता के श्लोक के पाठ से, भगवान के स्मरण और कीर्तन से तथा आत्मतत्त्व में विश्रांतिप्राप्त संत के दर्शनमात्र से करोड़ों तीर्थ करने का फल प्राप्त होता है।’

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू द्वारा प्रेरित

२५ दिसम्बर - तुलसी पूजन दिवस

तुलसी के गुण, उपयोगिता, महत्ता भारत के ऋषि-मुनियों की ऊँची खोज है। तुलसी माँ के समान सभी प्रकार से हमारा रक्षण व पोषण करती है। तुलसी को 'विष्णुप्रिया' कहा जाता है।

'संसारभर के फूलों और पत्तों से जितने भी पदार्थ या दवाइयाँ बनती हैं, उनसे जितना आरोग्य मिलता है उतना ही आरोग्य तुलसी के आधे पत्ते से मिल जाता है।' - स्कंद पुराण

देश में सुख, सौहार्द, स्वास्थ्य, शांति से जन-समाज का जीवन मंगलमय हो इस लोकहितकारी उद्देश्य से प्राणिमात्र के हितचिंतक पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की पावन प्रेरणा से वर्ष २०१४ से २५ दिसम्बर को 'तुलसी पूजन दिवस' मनाना प्रारम्भ हुआ। तुलसी-पूजन से बुद्धिबल, मनोबल, चारित्र्यबल व आरोग्यबल बढ़ेगा।

तुलसी एक, लाभ अनेक

* यह प्रदूषित वायु का शुद्धीकरण करती है। * प्रातः खाली पेट तुलसी के ५-७ पत्ते चबाकर पानी पीने से बल, तेज और स्मरणशक्ति बढ़ती है। * तुलसी गुर्दे की कार्यशक्ति को बढ़ाती है। * कोलेस्ट्रॉल को सामान्य कर हृदयरोग में आश्चर्यजनक लाभ करती है। * आँतों के रोगों के लिए तो यह रामबाण औषधि है। * इससे प्राणघातक रोग भी ठीक हो सकते हैं। * नित्य तुलसी-सेवन से अम्लपित्त (एसिडिटी) दूर हो जाता है, मांसपेशियों का दर्द, सर्दी-जुकाम, मोटापा; बच्चों के रोग, विशेषकर कफ, दस्त, उलटी, पेट के कृमि (७०% बच्चों को पेट में कृमि होते हैं) आदि में लाभ करती है।

धन-सम्पदा प्रदायिनी तुलसी

* ईशान कोण (उत्तर व पूर्व मध्य भाग) में तुलसी का पौधा लगाने से तथा पूजा के स्थान पर गंगाजल रखने से बरकत होती है। * तुलसी को रोज जल चढ़ाने तथा गाय के धी का दीपर जलाने से घर में सुख-समृद्धि बढ़ती है। * 'जो दारिद्र्य मिटाना व सुख-सम्पदा पाना चाहता है, उसे तुलसी पूजन दिवस (२५ दिसम्बर) के अवसर पर शुद्ध भाव व भक्ति से तुलसी के पौधे की १०८ परिक्रमा करनी चाहिए। - पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

शास्त्रों तथा वैज्ञानिकों ने गायी तुलसी की महिमा

* ब्रह्मवैर्त पुराण - 'प्रातः काल तुलसी का दर्शन करने से सवा ग्राम सुवर्ण दान का फल प्राप्त होता है।'

* एस.वी. विश्वविद्यालय, तिरुपति - 'तुलसी का पौधा उच्छ्वास में ओजोन वायु छोड़ता है, जो विशेष स्फूर्तिप्रद है।'

* आभामंडल नापने का यंत्र, 'युनिवर्सल स्कैनर' द्वारा परिक्षण - 'यदि कोई तुलसी के पौधे की परिक्रमा नौ बार करता है तो उसके सकारात्मक (positivity) आभामंडल के प्रभाव क्षेत्र में ३ मीटर की आश्चर्यजनक बढ़ौतरी होती है।'

* 'तुलसी एक अद्भुत औषधि (Wonder Drug) है, जो ब्लडप्रेशर व पाचनतंत्र के नियमन, रक्तकणों की वृद्धि एवं मानसिक रोगों में अत्यंत लाभकारी है।' - फ्रेंच डॉक्टर विक्टर रेसीन

सावधानी : अमावस्या, पूर्णिमा, द्वादशी को तुलसी न तोड़ें। रविवार को न तोड़ें, न खायें।

तुलसी-सेवन के दो घंटे पहले से २ घंटे बाद तक दूध न लें।

तुलसी पूजन विधि

* २५ दिसम्बर को सुबह स्नानादि के बाद घर के स्वच्छ स्थान पर तुलसी के गमले को जमीन से कुछ ऊँचे स्थान पर रखें। * उसमें यह मंत्र बोलते हुए जल चढ़ायें : महाप्रसादजननी सर्वसौभायवर्धनी। आधिव्याधि हरिनित्यं तुलसि त्वां नमोऽस्तु ते ॥। * फिर 'तुलस्यै नमः' मंत्र बोलते हुए तिलक करें, अक्षत (चावल) व पुष्प अर्पित करें तथा वस्त्र व कुछ प्रसाद चढ़ायें। * दीपक जलाकर आरती करें। * तुलसीजी की ७, ११, २१, ५१ या १०८ परिक्रमा करें। * उस शुद्ध वातावरण में शांत हो के भगवत्प्रार्थना एवं भगवन्नाम या गुरुमंत्र का जप करें। तुलसी के पास बैठकर प्राणायाम करने से बल, बुद्धि और ओज की वृद्धि होती है। * तुलसी-पत्ते डालकर प्रसाद वितरित करें। * तुलसी-नामाष्टक का पाठ भी पुण्यकारक है।

तुलसी नामाष्टक - वृन्दां वृन्दावनीं विश्वपावनीं विश्वपूजिताम् । पुष्पसारां नन्दिनीं च तुलसीं कृष्णजीवनीम् ॥

एतन्नामाष्टकं चैतत्स्तोत्रं नामार्थसंयुतम् । यः पठेत्तां च संपूर्णं सोऽश्वमेधफलं लभेत् ॥

भगवान नारायण देवर्षि नारदजी से कहते हैं : 'वृन्दा, वृन्दावनी, विश्वपावनी, विश्वपूजिता, पुष्पसारा, नन्दिनी, तुलसी और कृष्णजीवनी - ये तुलसी देवी के आठ नाम हैं। यह सार्थक नामावली स्तोत्र के रूप में परिणत है। जो पुरुष तुलसी की पूजा करके इस नामाष्टक का पाठ करता है, उसे अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त हो जाता है।' (ब्रह्मवैर्त पुराण)

श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ कल्याणकारी श्लोकों का पाठ

गीताया: श्लोकाठेन गोविन्दसृतिकीर्तनात् । साधुदर्शनमात्रेण तीर्थकोटिफलं लभेत् ॥

‘गीता के श्लोक के पाठ से, भगवान के स्मरण और कीर्तन से तथा आत्मतत्त्व में विश्रांतिप्राप्त संत के दर्शनमात्र से करोड़ों तीर्थ करने का फल प्राप्त होता है।’

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।

त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽजुनं ॥

‘हे अर्जुन ! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं – इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्व से जान लेता है, वह शरीर को त्यागकर फिर जन्म को प्राप्त नहीं होता किंतु मुझे ही प्राप्त होता है।’ (गीता : ४.९)

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।

उपदेश्यति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥

‘उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको भलीभाँति दंडवत् प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्मतत्त्व को भलीभाँति जानेवाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।’ (गीता : ४.३४)

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।

सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ॥

‘यदि तू अन्य सब पापियों से भी अधिक पाप करनेवाला है, तो भी तू ज्ञानरूप नौका द्वारा ज्ञान हरा जाएगा।’ (गीता : ४.३६)

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।

तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ॥

‘इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करनेवाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है। उस ज्ञान को कितने ही काल से कर्मयोग के द्वारा शुद्धांतः करण हुआ मनुष्य अपने-आप ही आत्मा में पालेता है।’ (गीता : ४.३८)

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।

अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥

‘जिस जीवात्मा द्वारा मन और इन्द्रियोंसहित शरीर जीता हुआ है, उस जीवात्मा का तो वह आप ही मित्र है और जिसके द्वारा मन तथा इन्द्रियोंसहित शरीर नहीं जीता गया है, उसके लिए वह आप ही शत्रु के सदृश शत्रुता में बरतता है।’ (गीता : ६.६)

विश्वगुरु भारत कार्यक्रम (२५ दिसम्बर से १ जनवरी)

२५ दिसम्बर से १ जनवरी के द्वारान शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन, आत्महत्या जैसी घटनाएँ, युवाधन की तबाही एवं अवांछनीय कृत्य खूब होते हैं। इसलिए विश्वमानव के कल्याण के लिए पूज्य बापूजी का आवाहन है : “२५ दिसम्बर से १ जनवरी तक तुलसी-पूजन, जप-माला पूजन, गौ-पूजन, हवन, गौ-गीता-गंगा जागृति यात्रा, सत्संग आदि कार्यक्रम आयोजित हों, जिससे सभीकी भलाई हो, तन तंदुरुस्त व मन प्रसन्न रहे तथा बुद्धि में बुद्धिदाता का प्रसाद प्रकट हो। गौ, गंगा, तुलसी से ओजस्वी-तेजस्वी बनें व गीता-ज्ञान से अपने मुक्तात्मा, महानात्मा स्वरूप को जानें।”

सम्पर्क :

सप्रेम भेंट :

दैवी ह्लेषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥

‘क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है परंतु जो पुरुष केवल मुझको ही निरंतर भजते हैं, वे इस माया को तर जाते हैं।’ (गीता : ७.१४)

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः ।

मायायापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥

‘माया के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे आसुर-स्वभाव को धारण किये हुए, मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करनेवाले मूढ़ लोग मुझको नहीं भजते।’ (गीता : ७.१५)

सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढब्रताः ।

नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते ॥

‘वे दृढ़ निश्चयवाले भक्तजन निरंतर मेरे नाम और गुणों का कीर्तन करते हुए तथा मेरी प्राप्ति के लिए यत्न करते हुए और मुझको बार-बार प्रणाम करते हुए सदा मेरे ध्यान में युक्त होकर अनन्य प्रेम से मेरी उपासना करते हैं।’ (गीता : ९.१४)

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

‘जो अनन्य प्रेमी भक्तजन मुझ परमेश्वर को निरंतर चिंतन करते हुए निष्कामभाव से भजते हैं, उन नित्य-निरंतर मेरा चिंतन करनेवाले पुरुषों का योगक्षेम में वहन करता हूँ।’ (गीता : ९.२२)

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।

सोऽपि मुक्तः शुभाल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ॥

‘जो मनुष्य श्रद्धायुक्त और दोषदृष्टि से रहित होकर इस गीताशास्त्र का श्रवण भी करेगा, वह भी पापों से मुक्त होकर उत्तम कर्म करनेवालों के श्रेष्ठ लोकों को प्राप्त होगा।’ (गीता : १८.७१)